

## साधना के लिए आहार संयम करें।

युवाचार्य महाश्रमण

बीदासर 18.फरवरी 09 शरीर के पोषण का आधार - आहार है। भोजन के द्वारा व्यक्ति शरीर की एक अपेक्षा की पूर्ति करता है। भोजन का अभाव और अतिभाव दोनों ही साधक तथा व्यक्ति के लिए कठिनाई पैदा कर सकता है।

जैन साधना पद्धति के निर्जरा के भेदों का उल्लेख करते हुए तेरापंथ भवन के श्रीमद् मधवा समवसरण में युवाचार्य महाश्रमण ने कहा - निर्जरा के आथम चार भेद रसनेन्द्रिय विजय का आधार है। व्यक्ति अपने सन्तुलित कार्य और व्यवहार के लिए आहार का विवेक अत्यन्त जरुरी है।

आपने आगे कहा- खाते हुए संयम रखना बड़ी बात है। साधना के विविध आयोग व्यक्ति के जीवन को दुख से मुक्त कर देते हैं। व्यक्ति भोजन के लिए न जीए अपितु साधना संयम से लिए भोजन का आयोग करें।

## स्मृति सभा

बीदासर 18.फरवरी 09 चुरु जिला अणुव्रत समिति के अध्यक्ष किशनलाल तातेड़ के निधन पर उनके पारिवारिक जनों के बीच आचार्य महाआज्ञा ने कहा- तातेड़ अणुव्रती तो था ही पर धर्मसंघ की सेवा में भी सदा तत्पर रहता था। वह सच्चा शासनसेवी था। उसके अभाव को पूरा करने के लिए नये लोगों को आगे आना चाहिए।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा- अपनी साधना के साथ-साथ दूसरे लोगों का सहयोग करना भी एक बड़ी बात है। किशन लाल तातेड़ एक सच्चे श्रावक कार्यकर्ता थे।

अणुव्रत पभारी मुनि सुखलाल ने कहा - अणुव्रत का कार्य वहीं व्यक्ति कर सकता है जो स्वयं नीतिनिष्ठ एवं नशा मुक्त हो। तातेड़ एक सच्चे अणुव्रती कार्यकर्ता थे।

शिक्षक रामचंद्र ने कहा - तातेड़ एक सार्वजनिक कार्यकर्ता थे। उनके रत्नगढ़ में ब्लड बैक-जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य करवाये। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छा कार्य किया। पिछले वर्षों में चूरु जिले में उन्होंने 15000 छात्रों का अणुव्रत परीक्षाएं दिलवाईं।

श्री तातेड़ की स्मृति में मुनि किशनलाल, मुनि कमल कुमार मोतीलाल तातेड़, रूपचंद्र सेठिया, रत्नगढ़ महिला मंडल, चौथमल बोथरा आदि अनेक लोगों ने अपनी भावान्जली आस्तुत की। इस अवसर पर किशनलाल तातेड़ की पत्नी श्रीमती पुखराज देवी की ओर से उनकी स्मृति में अणुव्रत समिति चुरु को एक लाख इक्कीस हजार रुपये का अनुदान देने की घोषणा की गई।

## प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन

बीदासर 18.फरवरी 09 अष्ट दिवसीय ओक्षाध्यान शिविर की सम्पन्नता के अवसर पर युवाचार्य महाश्रमण ने शिविर की पांच उपसंपदाओं के सूत्रों में मिताहार और मितभाषण के संदर्भ में कहा - साधना के लिए आहार संयम और वाणी संयम का आयोग जीवन में चलते रहना चाहिए।

जीवन शैली को सुसुम्भ बनाने के लिए साधना के आयोग लम्बे समय तक चलने चाहिए व्यक्ति इन आयोगों को निष्ठा के साथ निरन्तरता बनाये रखें तो जीवन शैली में परिवर्तन, व्यवहार में परिवर्तन घटित होने लगता है।

ओक्षाध्यान शिविर के समापन सत्र में विमल सिंह सेठिया मदनलाल कांकरिया, गौरव भंसाली ने शिविर अनुभव आकट किये, ओक्षाध्यान - जीवन विज्ञान आभारी कमल सिंह दुगड़ ने शिविर झलक आस्तुत कर आभार आकट किया एवं गुरुदेव के चरणों में मुझे ऐसा वर दे दे गुणगान करूं तेरा..... का संगान किया।

ओक्षाध्यान आध्यापक मुनिश्री किशनलाल ने आगामी शिविर की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

नोट :- उपरोक्त समाचार के फोटो ई-मेल द्वारा ओषित कर दी गई है।